श्रीराम धर्मार्थ सोसाइटी का कथित प्रशासक 'गायब', अस्पताल का कोविड सेंटर ठप

उसका कार्यकाल बढ़ाने की सूचना डीआईसी दफ्तर फरीदाबाद के पास नहीं

मजदूर मोर्चा ब्यूरो

फरीदाबादः सरकारी जमीन पर कब्जा कर बनाए गए श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल का कथित सरकारी प्रशासक गायब है। उसके सेवा विस्तार को लेकर स्थिति स्पष्ट नहीं है। अस्पताल में एक हफ्ते से उसके दर्शन नहीं हुए हैं। अस्पताल का कोविड सेंटर ठप हो गया है। निलंबित प्रधान कंवल खत्री ने अस्पताल में ओपीडी चलाने के लिए अपने कुछ लोगों की बुधवार को केंद्रीय मंत्री कृष्णपाल गूजर के सामने परेड कराई।

कौन है अब प्रशासक, कहां गायब है

श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल को संचालित करने वाली संस्था श्रीराम धर्मार्थ चेरिटेबल सोसायटी में विवाद बढ़ने और कंवल खत्री पर आर्थिक हेराफेरी के आरोप लगने के बाद जब उसे निलंबित कर दिया गया तो रजिस्ट्रार सोसायटीज फरीदाबाद ने यहां अपना प्रशासक नियुक्त कर दिया। इस प्रशासक ने यहां का विवाद सुलझाने की बजाय इनकी राजनीति में शामिल हो गया और यहां कोविड सेंटर शुरू करा दिया। कोविड सेंटर में कुल 5 मरीज आए लेकिन प्रशासक ने सोसाइटी के 11 लाख रुपये खर्च कर डाले। प्रशासक ने बैंक में जमा एफडी पर कोविड सेंटर चलाने के नाम पर लोन ले लिया। हालांकि उसे एफडी पर लोन लेने का अधिकार नहीं है। प्रशासक की नियुक्ति तीन महीने यानी 7 जून तक थी। 7 जून को फरीदाबाद के रजिस्ट्रार आई.एस. यादव को निलंबित कर दिया गया। लेकिन यादव ने उसी दिन मजदूर मोर्चा को बताया था कि उन्होंने एक दिन पहले ही श्रीराम धर्मार्थ सोसाइटी के प्रशासक का कार्यकाल बढ़ा दिया है। लेकिन बढ़ाए गए कार्यकाल के लेटर का कहीं पता नहीं है।

फरीदाबाद डीआईसी दफ्तर में मजदूर मोर्चा ने इस मामले की छानबीन की। डीआईसी दफ्तर के डिस्पैच रजिस्टर में श्रीराम धर्मार्थ सोसाइटी के प्रशासक का कार्यकाल बढ़ाने का लेटर जारी नहीं किया गया है। यानी 7 जून से लेकर 17 जून तक के डिस्पैच में इस तरह के सरकारी लेटर की कोई एंट्री नहीं है। श्रीराम धर्मार्थ सोसाइटी से संबंधित पूरी फाइल फरीदाबाद में ही रहती है, उसमें भी इस तरह का लेटर नहीं पाया गया। इस मामले में एक क्षीण सी संभावना यह जताई गई कि चूंकि आई.एस. यादव के पास गुड़गांव का भी चार्ज था, हो सकता है, वहां से लेटर जारी हुआ हो। लेकिन ऐसा लेटर कम से कम फरीदाबाद दफ्तर को जरूर भेजा जाएगा, ताकि यहां से आगे की कार्यवाही की जा सके। लेकिन इस बारे में या उस आदेश का कोई लेटर फरीदाबाद दफ्तर में प्राप्त नहीं हुआ है।

डीआईसी दफ्तर के सूत्रों ने इस बात की पुष्टि की है कि श्रीराम धर्मार्थ का प्रशासक अभी तक फरीदाबाद दफ्तर में नहीं आया है और न ही उसने सोसाइटी के संबंध में किसी तरह की कोई रिपोर्ट पेश की है।

प्रशासक श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल में भी नहीं आ रहा है। सूत्रों ने बताया कि पिछले एक हफ्ते से प्रशासक की शक्ल यहां नहीं दिखी।

फिर कौन चला रहा है कोविड सेंटर

सोसाइटी के प्रशासक की स्थिति अभी अस्पष्ट है। यानी वो प्रशासक है या नहीं, इस पर अंतिम निर्णय आना बाकी है। लेकिन जिस तरह से उसके दर्शन अस्पताल में नहीं हुए हैं तो सवाल ये है कि अस्पताल में बने कोविड सेंटर को चला कौन रहा है। कंवल खत्री गैंग प्रशासक की आड़ में और राजनीतिक रसूख हासिल कर श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल में घुसा था। प्रशासक ने कोविड सेंटर चलाने के लिए जो कमेटी बनाई, उसमें न सिर्फ कंवल खत्री को लिया गया बल्कि उसके कहने पर बाकी चार सदस्य भी प्रशासक ने रख लिए। अब प्रशासक पिछले एक हफ्ते से गायब है तो क्या उसकी बनाई कमेटी कोविड सेंटर को चला रही है। अभी जब उसके प्रशासक बने रहने पर ही सवालिया निशान लगे हुए हैं तो ऐसे में कोई कमेटी बिना प्रशासक कोविड सेंटर कैसे चला सकती है। कोविड सेंटर की ताजा स्थिति ये है कि वहां अब कोई मरीज नहीं है। दोनों डॉक्टरों को इस कथित कमेटी ने आने से मना कर दिया है। कुछ अन्य स्टाफ भी कम कर दिया गया है। पूरा कोविड सेंटर अब ठप है। यहां पर कंवल खत्री और जोगिन्द्र चावला नियमित आते हैं और कुछ देर टाइम पास करने के बाद वापस लौट जाते हैं। आईएमए के कंसनटेटर बिना इस्तेमाल हुए धूल चाट रहे हैं।

प्रशासक सोसाइटी के 11 लाख रुपये खर्च कराकर सोसाइटी को पहले ही मुश्किल में डाल चुका है। श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल के संस्थापक सदस्य एस.एम. हाशमी का कहना है कि अस्पताल के नाम पर हमने और स्व. बृजमोहन भाटिया ने जो एफडी कराई थी, वो अस्पताल को आगे बढ़ाने और सोसाइटी को ठीक प्रकार से चलाने के लिए कराई थी। लेकिन इस पैसे पर कंवल खत्री गुट की नजर शुरू से ही लगी हुई थी। अब इस पैसे को जिस तरह बर्बाद किया जा रहा है वह दुखद स्थिति है। हमारे अस्पताल को लोग दान देना बंद कर देंगे।

गूजर की शरण में कंवल खत्री

कोविड सेंटर की आड़ में सोसाइटी के लाखों रुपये ठिकाने लगाने के बावजूद अब जब कोविड सेंटर डूब गया तो कंवल खत्री गैंग अब यहां ओपीडी चलाने की जुगाड़ में जुट गया है। इसके लिए उसने फिर से भाजपा विधायक सीमा त्रिखा की सेवाएं लीं। सीमा ने बहुत भागदौड़ की लेकिन अब जब ओपीडी शुरू नहीं हो पाई तो सीमा त्रिखा ने गेंद केंद्रीय मंत्री गूजर के पाले में डाल दी है। कृष्णपाल गूजर के समय देने पर कंवल खत्री अपने खास 20-22 लोगों को लेकर केंद्रीय मंत्री से मिलने बुधवार को उनके दफ्तर पर गया। वहां उन्होंने अस्पताल की ओपीडी चलाने के लिए कुछ जुगाड़ करने को कहा। गूजर से आश्वासन लेकर खत्री गुट लौट आया है।

गूजर से जुड़े सूत्रों का कहना है कि सीमा त्रिखा और कंवल खत्री ने कोविड सेंटर खुलवाने के लिए केंद्रीय मंत्री को पिछली बार गलत फीडबैक देते हुए सभी पक्षों में समझौता होने की जानकारी दी थी। लेकिन गूजर को अब पता चल चुका है कि उन्हें गलत सूचना दी गई थी और इसके जरिए सीमा त्रिखा से जुड़े लोगों ने अपने स्वार्थों की सिद्धि की है। इसलिए ओपीडी खुलवाने में गूजर इस कंवल खत्री गैंग का कितना साथ देते हैं, यह वक्त बताएगा। गूजर को उनके पंजाबी समर्थकों ने सलाह दी है कि वे पंजाबी बिरादरी के झगड़े से खुद को दूर रखें। पिछले दिनों दशहरा कार्यक्रम में एक गुट गूजर की सार्वजनिक फजीहत वैसे भी करा चुका है।

कीमती जमीन पर है नजर

श्रीराम धर्मार्थ अस्पताल और सोसाइटी पर कब्जे की आड़ में दरअसल इस सरकारी जमीन पर काफी लोगों की नजर है। इसलिए हर कोई सोसाइटी में घुसना चाहता है और सरकारी जमीन पर कब्जा करना चाहता है। यह जगह नगर निगम फरीदाबाद (एमसीएफ) की है। यह बात न सिर्फ एमसीएफ के दस्तावेजों बल्कि अदालत में भी सिद्ध हो रखी है। ज्वाइंट कमिश्नर प्रशांत अटकान ने हाई कोर्ट के निर्देश पर जब एनआईटी में एमसीएफ की जमीनों को वापस लेने की कार्रवाई शुरू की तो उसी क्रम में अस्पताल पर भी सील लगाई गई। राजनीतिक रसूख वाले लोगों को लग रहा है कि अब अपनी सरकार है तो क्यों न यहां कब्जा करके दुकानें आदि खड़ी कर दी जाएं। पिछले दिनों भी इसकी तैयारी की गई थी। अस्पताल की आमदनी बढ़ाने के नाम पर यहां दुकानें बनाने का मौखिक प्रस्ताव कुछ लोग चलाते रहे हैं लेकिन श्रीराम सोसाइटी पर जब तक उनका पूरा नियंत्रण नहीं हो जाता, तब तक वे इस काम को सिरे नहीं चढ़ा सकते। यह सारी कवायद इसीलिए की जा रही है। राजनीति के जरिए इसे हासिल करने के अलावा और कोई चारा नहीं नजर आता, इसलिए राजनीतिक रसूखदारों पर डोरे डाले जा रहे हैं।

देखी-सुनी

खबरीलाल

खट्टर राग सुनने में अच्छा

हरियाणा के मुख्यमंत्री के बयान, उनकी बातें अब राग खट्टर कहलाने लगी हैं। वह बोलते अच्छा हैं। कई बार लगता है कि घर का बड़ा-बूढ़ा बोल रहा है। लेकिन बोलने के चक्कर में कई बार वो अपने साथी अनिल विज से भी आगे निकल जाते हैं। आपको उनका पिछला बयान याद होगा, जब उन्होंने कहा था कि वैक्सीन की कमी है तो वैक्सीन धीरे-धीरे लगाओ। हरियाणा सरकार के 600 दिन पूरे होने पर 17 जून को खट्टर ने एक ऐसा मजाक प्रेस कॉन्फ्रेंस में किया कि वहां बैठे पत्रकार भी दिल ही दिल में हंस रहे थे। खट्टर ने कहा कि मैं कांग्रेस को बता दूं कि हमारी सरकार ने अपने कार्यकाल में तो हरियाणा में कई मेडिकल कॉलेज बनाए ही हैं बल्कि पूर्व में बनाए गए कॉलेजों का भी विस्तार किया है। खट्टर ने यह बोलते समय पत्रकारों को उन अस्पतालों की सूची नहीं दी, जो उनकी सरकार ने पिछले सात वर्षों में बनाए हों। हो सकता है वो छायसां के अटल बिहारी वाजपेयी मेडिकल कॉलेज की बात कर रहे हों। लेकिन यह तो गोल्डफील्ड मेडिकल कॉलेज था, जिसे लाइसेंस कांग्रेस शासनकाल में मिला था। हो सकता है कि खट्टर झज्जर के मेडिकल कॉलेज की बात कर रहे हों लेकिन वह भी भूपेन्द्र सिंह हूड्डा के कार्यकाल में शुरू हो गया। लेकिन सीएम खट्टर जब यह राग प्रेस कॉन्फ्रेंस में अलाप रहे थे तो उसी समय नूंह के कांग्रेस विधायक आफताब अहमद ने सरकार की पोल खोल दी। उन्होंने कहा कि शहीद हसन खान मेडिकल कॉलेज के गार्डों ने उनसे मिलकर तीन महीने से वेतन न मिलने की शिकायत की और उसके बाद वे हड़ताल पर बैठ गए। सुरक्षा अभाव में मेडिकल कॉलेज बंद करने की नौबत आ गई। आफताब ने डीसी नूंह और मंत्री बनवारी लाल, मेडिकल कॉलेज के डायरेक्टर से बात कर मामला सुलझाने को कहा। तो खट्टर के दावे का दम मेवात के मेडिकल कॉलेज के गार्डों ने एक मिनट में निकाल दिया। जो सरकार तीन महीने से वेतन नहीं दे पा रही, वो ऐसे वादे करे तो उसे राग खट्टर न कहा जाए तो क्या कहा जाए।

जो हुड्डा था वही मनोहर है

हरियाणा में जब भाजपा सरकार आई तो आपने दो घोटाले के नाम जरूर सुने होंगे। एक था मानेसर जमीन घोटाला और दूसरा था नैशनल हेराल्ड को पंचकूला में जमीन देने का मामला। रोजाना भाजपाई मीडिया सरकार प्रायोजित खबरों को जिस तरह छापता था उससे लगता था कि पूर्व सीएम भूपेन्द्र सिंह हुड्डा और कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के दामाद रॉबर्ट वाड्रा को कभी भी जेल भेजा जा सकता है। वो दिन और आज का दिन कहां गए ये सारे जमीन घोटाले, खुद भाजपा कार्यकर्ता तक नहीं जानते। मानेसर जमीन घोटाले में एक और आईएएस अधिकारी टी. सी. गुप्ता का नाम भी कथित तौर पर आता था। ईमानदार छवि वाले आईएएस अशोक खेमका ने कई बार टी सी गुप्ता की तरफ जमीन घोटाले से जुड़े होने के संकेत दिए। लेकिन वो टीसी गुप्ता मनोहर सरकार में हुड्डा सरकार से भी ज्यादा पावरफुल होते चले गए। टीसी गुप्ता 31 मई को रिटायर हो गए। 14 जून को सीएम खट्टर उन्हें सेवा का अधिकार आयोग के चेयरमैन की शपथ दिलाते नजर आए। गुप्ता मंत्री जैसा दर्जा पाने वाले चेयरमैन हैं। यानी रुतबे में कमी नहीं रहेगी। अब जिन्हें उम्मीद है कि खट्टर सरकार मानेसर घोटाले में हुड्डा या टीसी गुप्ता को जेल भिजवाएगी, वे कृपया कंबल ओढ़ कर सो जाएं। ऐसा कुछ भी नहीं होने जा रहा है। जो हुड्डा था, वही मनोहर है। कोई भी सरकार आए-जाए महा घोटालेबाज आईएएस-आईपीएस अफसरों और नेताओं का कुछ नहीं बिगड़ता।

नड्डा से क्यों मिले अनिल विज

गृह मंत्री और स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज 17 जून को दिल्ली आए तो भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे. पी. नड्डा से मिलने भाजपा दफ्तर भी गए। वो अलग से मिलने गए थे। खट्टर खेमे को पता चला तो उनके कान खड़े हुए कि आखिर विज राष्ट्रीय अध्यक्ष से मिलने क्यों गए थे। हरियाणा सीआईडी को इस घटनाक्रम के बारे में मालूम तो था लेकिन उनकी क्या औकात की विज से सीधे पूछ सकें कि भाई साहब आपने नड्डा से क्या बात की। आखिरकार खट्टर की चिलम भरने वाले कुछ पत्रकारों और मीडिया सलाहकारों के दोस्तों को इस मोर्चे पर लगाया गया तो वे भी कुछ खास उगलवा नहीं सके। विज-नड्डा मुलाकात के तरह-तरह से कयास लगाए जा रहे हैं। सूत्रों का कहना है कि विज हरियाणा सरकार की तेजी से घटती लोकप्रियता की शिकायत लेकर नड्डा के पास गए थे। लेकिन विज न तो नड्डा को संतुष्ट कर पाए और न ही नड्डा विज को। मनोहर का नड्डा से तालमेल अच्छा बना हुआ है। मनोहर कई बार नड्डा की कोठी पर भी मिलने चले जाते हैं। हिमाचल जाते समय कई बार रास्ते में मनोहर आवभगत की वजह से नड्डा मुख्यमंत्री से पूरी तरह सेट हैं। बहरहाल, भाजपा आलाकमान के पास खट्टर खेमा अभी भी मजबूत है। विज जिस चांस की तलाश कर रहे हैं, वो दूर-दूर तक नहीं है।

बन्नूवाल बिरादरी की डायरी

फ़रीदाबाद में बन्नूवाल बिरादरी का बड़ा नाम है। पाकिस्तान से उजड़कर आये लोगों को पहले प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने फ़रीदाबाद में बसाया था। एनआईटी भी उसी का हिस्सा है। एनआईटी को बन्नूवाल बिरादरी ने खड़ा होने में काफ़ी योगदान दिया। वक्त के साथ बन्नूवाल बिरादरी के काफ़ी बच्चे पढ़ लिख गए और उन्होंने सामाजिक कार्यों के लिए तमाम संगठन बना लिये। बन्नूवाल बिरादरी के शहर में अब 36 संगठन हो गए हैं। हाल ही में इस बिरादरी के सबसे बड़े ग्रुप ने फ़ोटो प्रतियोगिता कराई और चुने हुए फ़ोटो को एक डायरी में छापकर बाँटना शुरू किया। लॉकडाउन में क्रिएटिविटी के लिए यह बेहतरीन आइडिया था लेकिन अब जब डायरी छपकर आई तो लोगों ने सिर पीट लिया। डायरी में अशुद्धियों की भरमार है। लोकल धर्मगुरु पीर जगन्नाथ के संदेश को भयानक अशुद्धियों के साथ न सिर्फ़ ग़लत छापा गया बल्कि उसका प्रस्तुतिकरण जाहिलियत भरा है। तमाम फ़ोटो के लिए जगहें छोड़ी हुई हैं ऐसा लगता है कि छोड़ी गई जगहों में फिर से फ़ोटो लगाकर डायरी का दूसरा संस्करण लाया जाएगा। सबसे आपत्तिजनक तो यह है कि फ़रीदाबाद को बनाने वाले कुछ पूर्व विधायकों के फ़ोटो छापे गए हैं उनमें स्व. के एन गुलाटी, स्व दीपचंद भाटिया और स्व कुंदन लाल भाटिया हैं। गुलाटी और दीपचंद के नाम में श्री लगाया गया है और कुंदन के नाम से श्री ग़ायब है। अगर पूर्व विधायक डायरी में फ़ोटो छपने का क्राइटेरिया रखा गया था तो फिर चंदर भाटिया का भी फ़ोटो छापा जाना चाहिए था। डायरी में इतिहास को महत्व नहीं दिया गया। डायरी में विज्ञापन ठीकठाक जुटाए गए हैं। संगठन की अच्छी आमदनी हुई होगी। बरहाल, बन्नू बिरादरी के पढ़े लिखे युवकों ने डायरी को एक कोने में पटक दिया है।

प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक सतीश कुमार ने अपने स्वामित्व में एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सैक्टर-6, नोएडा से मुद्रित करवा कर 708 सैक्टर-14 फरीदाबाद से प्रकाशित किया। Postal Reg. No. L/H.R/FBD/463-06